अहं भाव

–कुमारी किरण भगत, जयपुर

परम आदरणीय सुन्दर साथ जी, आज हम सभी यह जानते हैं कि हम इस मिथ्या जगत में कैसे आए हैं। हमने 'श्री राजी महाराज' से तकरार करके इस झूठे खेल को देखने की इच्छा व्यक्त की। उनके बार बार मना करने पर भी हमने उनकी साहेबी को न पहचानते हुए अपने इश्क को बड़ा बताया तथा इस नश्वर जगत में आए। इस नश्वर जगत में हमारे ऊपर नींद का ऐसा आवरण चढ़ा हुआ है कि हम अपनी सुध खो बैठे हैं तथा इस माया में इतने तल्लीन हो गए हैं कि हम हमेशा अपनी अहंमियत को कायम रखना चाहते हैं। यद्यपि हमें जगाने के लिए हमारे 'पिया जी' ने वाणी जैसी अमूल्य निधि प्रदान की है लेकिन हम उसके मायने भी नहीं समझ रहे हैं और अपने अहं को कायम रखना चाहते हैं।

'आदरणीय सुन्दर साथ जी' श्री राजी महाराज की शक्ति सर्वदा हमारे बीच विद्यमान रही है तथा वह अब भी हमारे बीच में है लेकिन हम पहचान नहीं पा रहे हैं। जब 'श्री महाराज ठाकुर' के तन में बैठकर 'श्री राजी महाराज' ने लीला की थी तो उस समय तन तो माया का ही था पर चूँकि उस तन से 'श्री राजी महाराज' ने काम लेना था अतः उसमें उन्होंने अपनी सम्पूर्ण शक्ति भेजी तथा जागनी का कार्य करवाया और वाणी भी उनके द्वारा ही हमारे समक्ष आई।

'आदरणीय सुन्दर साथ जी' इस बात को हम सभी जानते हैं कि आत्मा हमेशा जन्म और मरण से रहित होती है। शरीर ही जन्मता और मरता है लेकिन फिर भी हम श्री प्राणनाथ जी का व्रत रखते हैं। मैं आपसे यह नहीं कहती कि आप इसे मत रखिये। मैं तो आपसे सिर्फ इतनी सी बात पूछना चाहती हूँ कि जब आत्मा सभी बन्धनों से मुक्त होती है (वह मरती नहीं) तो क्या हम उस शरीर को ही सब कुछ समझ बैठे हैं? आदरणीय सुन्दर साथ जी 'धनी श्री देवचन्द्र जी' में भी तो 'श्री राजी महाराज' की शक्ति ने ही काम किया था तो फिर हम समस्त सुन्दर

Nijanand App

साथ (बच्चे सहित) उनका व्रत क्यों नहीं करते। यह सत्य है कि हमें उनके शरीर छोड़ने का दुःख तो अवश्य है परन्तु 'मेरे प्राणाधार सुन्दर साथ जी यह शरीर तो नश्वर है, यह अजर या अमर तो है नहीं जो कि 'श्री राजी महाराज' हमेशा उसी तन से लीला करते रहते।

चूँकि एक दिन तो इस शरीर को नष्ट होना ही है तथा हमारी इच्छायें अभी तक पूर्ण नहीं हुई हैं और हम माया में मस्त होकर अपनी चाल को भूलकर दुनियाँ की चाल चल रहे हैं। अतः 'श्री राजी महाराज' ने हमको जगाकर अभी धाम भी ले जाना है। इसलिए यह तो स्वाभाविक ही है कि जिस प्रकार हमारे कपड़े यदि बहुत पुराने हो जाते हैं तो हम उनको फेंक देते हैं तथा नये पहनते हैं। ठीक उसी प्रकार जब एक शरीर में कुछ कार्य करने की क्षमता नहीं रह जाती तो जागनी का कार्य करवाने के लिये (जब तक सभी आत्मायें नहीं जाग जातीं) 'श्री राजी महाराज' किसी भी तन को शक्ति दे सकते हैं। शोभा वह किसी भी तन को दे सकते हैं।

प्यारे सुन्दर साथ जी, 'श्री राजी महाराज' की शक्ति के बिना इस मिट्टी के पुतले में क्या हिम्मत है कि वह अक्षरातीत के कार्यों को सम्पूर्ण कर सके। ये तो 'पिया' की मेहर है वह किसी भी तन से काम ले सकते हैं।

क्यूँ मेहर मुझपे भई,
ए थी दिल में शक।
मैं जानी मौज महबूब की,
वा देत आप माफक ॥

इस बात को जानते हुये भी आज हम माया के नशे में चूर होकर अपनी अहं को कायम करना चाहते हैं। आज हम झूठी शान के पीछे सभी कार्य करते हैं। यद्यपि आज हमारे पास जाग्रत बुद्धि है परन्तु फिर भी हम समझने का प्रयास नहीं करते कि हमारे यहाँ प्रचीन काल से जो प्रथायें चली आ रही हैं उनके पीछे कारण क्या है ? बस हम वो औपचारिकता निभाकर अपने आपको गौरवशाली अनुभव करते हैं कि हमने अपनी प्राचीन काल से चली आ रही परम्परा को कायम तो रखा। आदरणीय सुन्दर साथ जी, मैं आपसे इतनी प्रार्थना अवश्य करूँगी कि हम कोई भी कार्य करने से पहले उस पर विचार करके अवश्य देखें कि उसके पीछे कारण क्या है ?

आज हम माया में मस्त होकर अपने अहं में इतना डूबे हुये हैं कि हम सत्य को तो सुनते नहीं और झूठ को आँख बन्द करके ही विश्वास कर लेते हैं। प्यारे

Nijanand App

सुन्दर साथ जी, हमें किसी भी बात को सिर्फ कानों से सुन कर ही सत्य नहीं मानना चाहिए । हमें उसे सत्य तभी मानना चाहिये यदि हम उसी बात को अपनी आंखों से देखें अन्यथा वह बात झूठी भी हो सकती है।

अन्त में मैं आपके चरणों में सिर्फ इतनी सी अर्ज करूँगी कि हम हमेशा सत्य के मार्ग पर ही चलें तथा किसी की मिथ्या बातों में विश्वास न करें। यदि कोई त्रुटि हो तो क्षमा करें।

—o—

Nijanand App